अध्यात्म-रहस्यकी विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
मंगलाचरण	१
भजमान-भव्योंको निजपद-दानका रहस्य	२
योग-पारगामी-योगी	८
स्वात्माका स्वरूप	१०
शुद्ध-स्वात्माका स्वरूप	१२
श्रुतिका लक्षण	१३
ध्येयका आप्तोपज्ञ विशेषण	१४
धर्म्यध्यान-शुक्ल०ध्यानका स्वरूप	१६
मतिका लक्षण	१८
ध्यातिका लक्षण	१९
दृष्टिका लक्षण	२०
सवित्ति और दृष्टिका स्पष्टी०	२१
दृष्टिका माहात्म्य	२२
श्रुतसागरके मन्थनका उद्देश्य	२३
सद्गुरुका स्वरूप	२३
मोक्षमार्ग और तदाराधना	२५
रत्नत्रयका स्वरूप (नि० व्य०)	२६
निश्चयरत्नत्रयकी स्पष्ट झांकी	२७
बुद्धिका लक्षण	२८
स्वसंवेदनके अतिरिक्त अन्यके त्यागका विधान	२९
भ्रान्त-अभ्रान्तका विवेक	३१
आत्मज्योतिके दर्शनकी प्रेरणा	३१
आत्म-दर्शनका उपाय	३२
आत्मज्योतिकी दृश्याऽदृश्यता	३३
आत्म-ज्योतिका लक्षण	३४
लक्षण-भेदसे स्व-पर-भेदसिद्धि	३५
उपयोगका स्वरूप और भेद	३५
आत्मशुद्धिका मार्ग	३६
अशुद्धि-हेतु रागादिकके विनाशका उपाय	३७
राग,द्वेष और मोहका स्वरूप	३७
राग-द्वेषरूप प्रवृत्तिका फल	३९
कर्मजनित सुख-दुःखकी कल्पना अविद्या है	४०
इन्द्रिय-विषय सुखरूप नहीं	४०
आत्मा सच्चिदानन्दरूप है	४१
आत्माके सत्स्वरूपका स्पष्टी०	४२
आत्मा जगत नहीं और न जगत स्वात्मा	४४
आत्माके चित्स्वरूपका स्पष्टी०	४४
द्रव्यकी उत्पादव्ययध्रौव्यात्मकता	४५
प्रतिक्षण उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यका स्पष्टीकरण	४६
द्रव्य-गुणपर्यायके लक्षण तथा जीव-गुण	४८
शेष द्रव्योंके गुण तथा अर्थ-पर्यायका स्वरूप	४८
जीव पुद्गलकी व्यंजनपर्याय	४९
जीव-पुद्गलके साथ दोनों पर्यायोंकी तन्मयता	५०

विषय	पृष्ठ
मुक्ताहारके रूपमें आत्म-भावना	५०
आनन्द-स्वरूपका स्पष्टीकरण	५१
आत्म-विकासका क्रम	५२
आत्माकी एकाऽनेकता	५३
आत्मसंस्कारका उपाय	५४
परंज्योतिका स्पष्टीकरण	५४
आत्माके द्वारा आत्माका दर्शन कब होता है	५५
आत्मानुभूतिका उपाय	५६
स्वात्माधीन आनन्द वचनके अगोचर है	५७
पिछली भूलका सिंहावलोकन	५७
भूल-भ्रान्तिकी निवृत्ति पर आनन्दका अनुभव	६०
तत्त्वज्ञानादिसे व्याप्त चित्तकी इन्द्रिय-दशा	६१
स्वानुभूति-वृद्धिके लिये भावना	६३
शुद्धोपयोगका क्रम-निर्देश	६४
अशुभसे निवृत्ति और शुभमें प्रवृत्तिके बिना व्यवहार-चारित्र भी नहीं बनता	६५
त्रिविध उपयोगका स्वरूप	६५
शुद्धात्मकी भावनाका फल	६६
शुद्धात्मस्वरूपमें लीन योगी-की निर्भयता	६७
परमानन्द-मग्न योगी बाह्य-दुःखोंसे खिन्न नहीं होता	६८
जीवन्मुक्तिकी ओर अग्रसरता	६८
त्रिविधकर्मके त्यागकी भावना	६९
भावकर्मका स्वरूप	७०
द्रव्यकर्मका स्वरूप	७१
नोकर्मका स्वरूप	७२
हेय और उपादेयका विवेक	७३
अहंकार-ममितव्यताके त्याग-ग्रहणकी प्रेरणा	७६
अहंकार की निःसारता और ममितव्यताके आश्रय-ग्रहण की दृष्टिका स्पष्टीकरण	७७
व्यवहार और निश्चय सम्यग्दर्शनका स्वरूप	८५
नि०और व्य०सम्यग्ज्ञान-स्वरूप	८६
सविकल्पज्ञानका स्वरूप	८६
द्विविधसम्यक्चारित्रका स्वरूप	८७
उभयरूप रत्नत्रयके कल्याण-कारित्वकी घोषणा	८८
हृदयमे परब्रह्मरूपके स्फुरणकी भावना	९०
अन्त्य-मंगल-कामना	९२
अध्यात्मरहस्यकी पद्यानुक्रमणी	९३
व्याख्यामें उद्धृत-वाक्योंकी अनुक्रमणी	९५
व्याख्यामें सहायक ग्रन्थ-सूची	९६